•मैं सनातनी नहीं हूँ•

सर्व प्रथम मै एक मानव हूँ। मानव एक समाजिक प्राणी हैं। मेरा समाज मानव समाज है। जिसकी सबसे छोटी इकाई मेरा अपना घर– परिवार ही है। विस्तार क्रम में पड़ोस ,गली मोहल्ला ,पारा–टोला गाँव–शहर पटवारी हल्का, जनपद, जिला, संभाग प्रदेश देश–दुनिया के भूमण्डलीकरण के विस्तार में बंधा पाता हूँ। यह विस्तार प्रकृति के पर्यावरण के प्रभावी कारकों से प्रभावित है। जिसके परिणाम स्वरूप जलश्रोतों के प्रतिरूपण मे पोखरो तालाबों झीलों नालों ,नदी,सागर,महासागरों भूस्थल के प्रतिरूपण में मैदानों पठारों,पहाड़ी पहाड़ों रेगिस्तान भूगर्भ कें प्रतिरूपण में भूगर्भिक जल खनिज सम्पदा का विशाल भण्डार,, इनको आच्छादित करता आकाशी पिण्डों सूरज चांद तारे ग्रह नक्षत्र है। और इन सभी को बांधे रखन प्रकृति की अदृश्य शक्तियाँ वायु ध्वनि चुम्बक, विधुत, उष्मा, आकर्षण की उर्जा है। इन समस्त श्रोतों के संचरण प्रक्रिया संक्रिया के अधीन असंख्य प्रकारों के अण्डज पिण्डज के स्वरूपण में जीव–जंन्तु की उत्पत्ति की विशालता। ठोस तरल एवं गैसीय प्रतिरूपण में घातु अधातु तत्वो की उत्पत्ति पूरे भूमण्डलीय को श्रृगांरित कर रहा है। ये श्रृगार के वितरण में ज्योतिष विज्ञान के अनुसार देश, काल परिस्थिति के साथ नवग्रह, बारह राशियाँ और सत्ताइस नक्षत्र की खगोलीय गतियों के साथ भौगोलिक पर्यावरण के अध्ययन में मानी गई 180 अक्षांश रेखा जिसमें भूमध्य रेखा, मकर रेखा, कर्क रेखा, उत्तर–दक्षिण कटिबंध रेखा प्रमुख है और 360 देशांश रेखाओं के माइक्रों (सुक्ष्म से सुक्ष्म) मानों का भी प्रभाव पड़ता है। मानवीय सभ्यता के विकास अध्ययन में ज्ञात हो चुका है कि भूमंडल में कई मानव सभ्यता का उदय एवं पतन का आदिकाल से अनवरत जारी है। महान विचारक श्री चिन्मय मिश्र के शब्दों में "कहते हैं भारत में मानवीय गतिविधियाँ 4,00,000 से 2,00,000 ईसा पूर्व के बीच प्रारंभ हो चुकी थी। अनेक गुफाओं में मिले भित्त चित्र इसकी सत्यता को प्रमाणित भी करते हैं। पुरातत्व शास्त्रियों ने भारत में कुल छः प्रजातीय तत्वों की पहचान की है। वे हैं नेपीटो,प्रोटो, आस्ट्रलाइड, मंगोलाइड भूमध्यसागरीय (मेडोटेरियन) पश्चिमी लघुशिरस्क (वेस्टर्न ब्रेसिसिफल) तथा नोर्डिक। कुछ लोग इसे नकार देंगें कि यह एक अवघारणा है। परन्तु सत्यता यहीं है कि भारतीय संस्कृति हमेशा से बहुलतावादी रही है।" उनके ये शब्द मानवीय संस्कृति विकास यात्रा में भारत में बोली जाने वाली बोलियों एवं भाषाओं के प्रकारों की विशालता एवं समृद्धता के आधार पर प्रमाणित है। जिसके प्रमाणिक होने का आधार 2001 की जनगणना उपरांत केन्द्र सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय की ओर से बोलियों को लेकर एक सर्वेक्षण कराया गया जिसके अनुसार 1961 के जनगणना के अनुसार भारत में 1652 बोली–भाषाओं का जिक्र है वहीं 2001 की जनगणना में मात्र 122 है। विचारनीय है कि युगों–युगों पूर्व और कितनी बोली–भाषाएँ उन्नत रहीं होगी? पुरातत्व खोजों में पाये गये शिलालेखों में से कई लेख आज पर्यंत आधुनिक विश्व के भाषाओ एवं संख्यांकन पद्धत्ति में अपठित व अविश्लेषित होने की जानकारी पुरातत्व शास्त्रियों ने अपने खोज संग्रह लेख में दी है। जिसका स्पष्ट कारण उस पुरातत्व खोज विशेष की सामायिक क्षेत्रीय भाषाओ एवं संख्यांकन पद्धत्ति के लिपि या संकेत का नष्ट हो जाना ही है। भारतीय पुरा विज्ञान में पाली एवं पाली भाषा से विकसित वैदिक कालीन संस्कृत भाषा लिपि को माना गया है। जिसे देवासुर संग्राम के बाद देव भाषा कहा गया। देव भाषा कहे जाने पर संस्कृत भाषा की मूल लिपि को देवनागरी

लिपि कहा गया । इस देव नागरी लिपि के आधार पर राष्ट्र भाषा हिन्दी का विकास हुआ है। प्राचीन पाली एवं देव भाषा कालीन मनीषी ऋषि मुनि अपनी युक्तियों व्युत्पत्तियों निष्कर्षों आदि के सामान्य ज्ञान को सामान्य भाषा एवं संख्या विज्ञान में मुखान्तरित अथवा लिपि बद्ध करते रहे। लेकिन गोपनीयता के लिए अंकन और अक्षर के बीच एक गुप्त ताल–मेल बनाकर रखते रहे। जिसके द्वारा गोपनीय अंकन ज्ञान को अक्षर ज्ञान में रचित ऋचावो (गद्यो) एवं श्लाकों (पद्यों) में तथा गुप्त संदश कथनों को संख्यांकन की विभिन्न विधाओं में कंठस्थ अथवा लिपि बद्ध करते रहे। विडम्बना है प्राचीन देव भाषा कालीन मनीषी ऋषि मुनियों और पूर्वजों पर ज्ञान–विज्ञान को गुप्त रखने का आरोप लगााकर युगों–युगों तक मात्र धरोहर ही मान रखा। जो की ऐसा कदापि नहीं हैं। यह तो मात्र तात्कालीन सामाजिक राजनैतिक एवं शैक्षणिक व्यवस्था का परिणाम ही है।

वर्तमान परिदृश्य में सामाजिक राजनैतिक एवं शैक्षणिक व्यवस्था सुधारों का जो भी विकास पथ अवलोकित कर रहे है उन सब के मूल में हमारे इन मनीषी ऋषि मुनियों और पूर्वजों पर ज्ञान– विज्ञान का अध्ययन ही है। इन पूवर्जी ज्ञान–विज्ञान के अध्ययन प्रखण्डों में ज्ञान–विज्ञान इतिहास एक महा प्रखण्ड है। पुरा इतिहास के अध्ययन में स्पष्टतः विदित कराया गया हे कि पूरे भूमण्डल में भूण्डलीय के पर्यावर्णिक कारकों के प्रभावों में रहन–सहन की विभिन्न्ता लिये अनेकों मानवीय सभ्यता का विकास होता रहा है। जल ही जीवन है। अतः प्राप्त जल श्रोतों की न्यूनता एवं विपुलता रहन–सहन की परिस्थिति का प्रथम कारक है। उदाहरणार्थ– जल ही जीवन है को आत्मसात करता भौगोलिक भूभाग क्षेत्र के निवासी अपने रहन सहन जल के भूगर्भिक पाकृत श्रोतो की उपलब्धता की न्यूनता से जूझता अपने रहन– सहन में जल ही जीवन है को आत्मसात करता दुनिया में संघर्ष यात्रा में नया सोपान दर्ज करा रहा है। इसके विपरीत जल के भूगर्भिक पाकृत श्रोतो की उपलब्धता की न्यनूता का आभास मुक्त है। अपने रहन–सहन में जल ही जीवन है के महत्ता से अनभिज्ञ ही प्रतीत हो रहा है। एक विकसित सभ्यता का पर्याय बना है। ऐसी पर्याय मे विकसित सभ्यता के प्राचीन इतिहास में हमारी भारतीय सभ्यता की मूल में अनार्य (आदिवासी) सभ्यता का विकास हुआ। जिसके विकास यात्रा में राजा बलि एवं उनके पूर्व विकास को स्वर्ण कालीन युग माना गया। इसी समकालीन सभ्यता जिसे स्वर्गिक–दैविक सभ्यता के नाम से जाना जाता है। ललचाये समुद्री मार्ग से मतस्य (मछली) गति से भारत के समुद्री तट की ओर की ओर चढ़ाई किया। (पौराणिक कथा सागर में स्वर्गिक–दैविक सभ्यता के प्रधान विष्णु का मतस्य अवतार के नाम से महिमामंडित कर गुणगान किया जा रहा है।) शांत प्रिय भारत की स्थिति ठीक वैसी रही थी जैसे कि 15 अगस्त 1947 में प्राप्त स्वतंत्रता उपरांत 1962 पाकिस्तान एवं चीन की सँयुक्त रूप से किये गद्दारिक चढ़ाई की थी। दोनों ओर भीषण युध्द हुआ। जिसे देवासुर {;देवत्रस्वर्गिक सभ्यता के सैनिकद्ध; असुरत्रभारतीय अनार्य सभ्यता के सैनिकद्ध} संग्राम नाम से महिमामंडित कर गुणगान किया जा रहा है। युध्द नहीं थमता देख समुद्रतट में क्च्छ राज के राजा कच्छप ;विष्णु का कच्छप=कछुआ अवतार , मन्दराचल राज के राजा मन्दराचल ;मन्दराचल पर्वत और सर्प राज के राजा वाशुकी की मध्यस्थता में कछुये की गति से हुये देवताओं एवं असुरों के बीच मूल में 14 पैरा में समझौता हुआ। जो स्वर्गिक सभ्यता विकास के प्रति 14 रत्न और अनार्य सभ्यता के प्रति पतन का मार्ग ही प्रशस्त किया। स्वर्गिक सभ्यता विकास को आर्य सभ्यता के रूप स्वीकारा गया। राज्य विस्तार के पथ अनुक्रमण

में आगे हिमालय के कैलाशी राज की ओर से प्रवेश मार्ग प्रशस्त करने कैलाश पति (अनार्य सभ्यता[5] के सत्यम् शिवम् सुन्दरम् के प्रभुत्व संरक्षक) शंकर का वदन कर उन्हें नशे का इस कदर आदी बनाया कि आर्य पति विष्णु के हाथों गरल (विष) पान कर लिया। जिसे अपने सहन शक्ति में गले में रोक लिया। शांत मनः स्थिति में आर्य का प्रवेश स्वीकार कर लिया। आर्यों ने महा दानी राजा बली के राज्य में वामनी (आकार के शब्दों बौना) संख्या बल में प्रवेश कर उत्पात् मचाने लगे। उनका उत्पात् इस कदर बढ़ गया कि राजा बलि ने स्वयं चर्चा के लिये आमंत्रित किया। आर्यों की ओर से विष्णु (अवतार कथा प्रसंग में वामन अवतार) ने प्रथम आर्यों के समग्र रहन –सहन के प्रति भूमि की व्यवस्थापन और अपने अनकुल शिक्षा व्यवस्था का दूसरा मांग की जिसे राजा ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। जिसे पाकर आयौं नें राजा के कर्म क्षेत्र और ज्ञान क्षेत्र को काबिज कर लिया। जिसका कर्म और ज्ञान दोनो क्षीण हो जाता है उसका और अन्य प्रकार से भरा–पूरा आमोद–प्रमोद स्वतः क्षीण हो जाता है। उसे मारने की जरूरत नहीं है। स्वतः मरने (पतन का शिकार होने) की ओर हो जाता है। राजा बलि अपना पतन स्वयं स्वीकार लिया। दान महात्य कथापान के रूप मीठा–विषपान ही कराया जा रहा है। इस प्रकार शांत अयुद्धीय संस्कृति से विभूषित जाति एवं वर्ण व्यवस्था से परे उत्तर दिश हिमालय और दक्षिण दिश सिन्धु (समुद्र) मध्य विशाल प्रायद्वीपी सम्पूर्ण अनार्य सभ्यता पतन क गर्त की ओर डूबते–डूबते संख्या बल में वामनी आर्यों के गुलामी एवं दासता को स्वीकारने बाध्य होने की ओर हो गये। वामनी आर्यों ने अपने आपको विष्णु के दरबारी सनद कुमारों के नाम पर सनातनी ब्रम्ह (पैदासी) ज्ञानाधारी घोषित कर लिया और अनार्यों को हिमालय का हि और सिन्धु का न्धु से बना शब्द हिन्धु को हिन्दु स्वीकार लिया। हिन् के लिये हिन (कमजोर) मानकर अपने सेवा दारों के प्रतिरूपण में क्षत्रिय वैश्य और शूद्र नाम से तीन वर्ण में बाँट लिया। सनातनी अपने आपकों ब्रम्ह से ब्राम्हण वर्ण मान लिया। इस प्रकार चार वर्ण व्यवस्था आर्य कालीन से इनके अधिकार एवं कर्तव्य को ये सनातनी केवल एवं केवल अपने आमोद –प्रमोद के संचायक के निहितार्थ नियम प्रतिबंध का संचयन संविधान मनुस्मृति नामक दण्ड सँहिता ग्रंथ प्रतिपादित कर लिया। समय दर समय परिवर्तन क्रम में कर्मकांडी जाति व्यवस्था में सभी वर्ण स्वमेय बँटने की ओर हो गये। वर्ण व्यवस्था में ब्राम्हण अपने आपकों सर्वोच्च ज्ञानधारी मानकर क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्ण को क्रमशः रक्षा का भार, आमोद –प्रमोद के साधन–प्रसाधन के संचाय का भार और शूद्र को कठिन एवं घृणित सेवा कार्यों का भार सौप दिया। कठिन एवं घृणित सेवादारों का स्तर रसोई , शयन , बैठक, बरामदा, आँगन , गली एवं गली से बाहर के प्रतिरूपण में होने लगा। स्वतंत्र भारत के संविधान में यें शूद्र वर्णिक पिछड़ा–वर्ग, अनुसूचित–जाति, अनूसूचित–जनजाति के संबोधन नामित है। जबकि आम्हण, क्षत्रिय और वैश्य वर्णिक के लिये एक ही संज्ञा सामान्य–वर्ग नामित है।

5 अनार्य सभ्यता के जनक मानव सभ्यता में प्रथम पाँव (छत्तीसगढ़ी शब्दावली में गोंड़) धरने वाले के नाम गोंड़ सभ्यता (गोड़वाना संस्कृति) का पर्याय ही है। जहाँ नाम के साथ जाति धर्म सूचक सम्बोधन का स्पष्टतः उल्लेख होना प्रतीत या प्रमाणित नहीं है। कालान्तर में आधुनिक विकास यात्रा मे जाति धर्म सूचक सम्बोघन ही प्रथम परिचय क्रम माना गया है। कालान्तर में यहीं गोंड़ [GOND] शब्द से गाड [GOD] प्रभु /इश्वर के लिये माना जा रहा है। मेरा अपना आत्मसाती विचार मंथन है।

ब्राम्हण और क्षत्रिय में वर्चस्व की लड़ाई का इतिहास बताता है–कि ब्राम्हण अपने रक्षार्थ क्षत्रिय गुण ज्ञान से आबद्ध होने लगे। विष्णु की अवतार कथा क्रम में भगवान परशुराम अवतरण कथा पढ़ाया–सुनाया जा रहा है। वर्चस्व की लड़ाई में शूद्र भी अपनी रक्षार्थ आबद्ध होने अनार्य सभ्यता के जनक मानव सभ्यता में प्रथम पाँव (छत्तीसगढ़ी शब्दावली में गोंड़) धरने वाले के नाम गोंड़ सभ्यता (गोड़वाना संस्कृति) का पर्याय ही है। जहाँ नाम के साथ जाति धर्म सूचक सम्बोधन का स्पष्टतः उल्लेख होना प्रतीत या प्रमाणित नहीं है। कालान्तर में आधुनिक विकास यात्रा मे जाति धर्म सूचक सम्बोघन ही प्रथम परिचय क्रम माना गया है। परणीति रक्ष संस्कृति का उदय हुआ। ब्राम्हण क्षत्रिय दोनों भयक्रांत होने लगे। ब्राहण क्षत्रिय दोनों में समझौता हुआ। इस रक्ष संस्कृति को स्वीकारने वालों को राक्षस एवं असुर (समझौता के प्रतिकूल) समूह /जाति से नामित किया। समझौता की परणीत विष्णु का रघुवंश तिलक रामावतार अवतरण कथा पढ़ाया–सुनाया जा रहा है। कभी न समाप्त होने वाली वर्चस्व की संघर्ष यात्रा क्रम में जातिगत सूचकों का प्रवेश हो चुका था रामावतार कथा में ब्राम्हण,क्षत्रिय,ऋषि, मुनि राक्षस, वानर, केंवट धोबी, रीछ जाति का स्पष्टतः उल्लेख है। सभी वर्ण में अन्तः संघर्ष पनपने लगा। गुटबाजी का दौर प्रारम्भ हो गया। वैश्य वर्ण में गोपालक यदुकुल यदुवंशी का उदय हुआ जिसका तिमारदारी करने ब्राम्हण क्षत्रिय वर्णिक जातिया आपस में बट गये परणीत विष्णु का यदुवंश तिलक कृष्णावतार अवतरण कथा पढ़ाया–सुनाया जा रहा है। इस प्रकार ये वामिनी सनातनी बदलती सत्ता में अपना प्रथम स्थान बनाये रखने सत्ताधीशों का गुणगान करने चारणी, सलाहकारी आचार्य कर्मकाण्डी ..... बन गये। ब्राम्हण ,क्षत्रिय और वैश्य एक होने लगे। शूद्र वर्णिक जन केवल और केवल इनके सेवादार के रूप में दलित और दलित्तर के रूप चिन्हांकित हो गये। इस प्रकार के वर्ण व्यवस्था को आर्यकालीन सभ्यता के रूप में वेद, पुराण,उपनिषद रामायण , महाभारत कथाओं का काढ़ा पिलाये जाने क्रमोत्तर जारी है और जारी ही रहेगा। जिसका पर्याय एक लोटा जल सब समस्या का हल प्रचारित एवं प्रसारित हो रहा है। इन्हें कैसे विदित कराये जो स्वयंभू शिव–शंकर अपने जटा में गंगा को धारण किया है। गंगोत्री से गंगासागर तक एक अपनी सभ्यता विकसित कराता है।

भूमण्डलीय मानव सभ्यता विकास में समुद्रतटीय, अरण्यीक मरूस्थलीय, पर्वतीय सभ्यता का संकलन द्वीपी, प्रायद्वीपी महाद्वीपी के सीमांकन में चिन्हित होने लगे। इन सभ्यता विकास यात्रा में धर्म का प्रादुर्भाव हुआ जिसके मूल में इसाई और मुस्लिम प्रमुख ह। सनातनी धर्म जिसमें स्वयं सनातनी और सनातनी हिन्दु (क्षत्रिय और वैश्य वर्णिक) ही आते है का पर्याय हिन्दु धर्म बना। शूद्र केवल और केवल सेवा धर्म से कर्तव्यरत बने रहे।

समय काल परिस्थिति का परिवर्तन क्रम सत्त जारी रहता है। सनातनी राजकुमार सिद्धार्थ का हृदय परिवर्तन होता है। गौतमबुद्ध के नाम पर बौद्धधर्म का उदय हुआ । सनातनी धर्माचार्यों ने इसका विरोध किया। जिसके परिणाम स्वरूप दलितों के केवल एक वर्ग जाति का धर्म बन गया । यह बौद्ध धर्म सम्राट अशोक आत्मसात करते है। स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माता डॉ. बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर सनातनी छूआछूत के घृणित मनुवादी वर्ण व्यवस्था से इस कदर पीड़ित होते हैं कि वे यह कहने बाध्य हो जाते है कि यद्यपि मै हिन्दु धर्म में जन्मा हूँ लेकिन

हिन्दु धर्म में मरूंगा नहीं। बौद्ध धर्म आत्मसात कर ही परम् निरवाण गति को प्राप्त करते हैं। यह बौद्ध धर्म जापान एवं चीन देश का राष्ट्रधर्म है।

इन सभ्यताओं में परस्पर सहयोग का आदान–प्रदान होने लगे। आगे चलकर यह सहयोग एक सभ्यता दूसरी सभ्यता पर हावी होने की ओर हो गया। सामरिक युद्ध की स्थितियाँ बनने लगी। सनातनियों ने बौद्ध साहित्य को जला दिया। बाद्धो को अछूत (जिसे छूना या स्पर्श करना मना है।) कहा जाने लगा। सनातनी एवं गैर सनातनी राजतंत्र का उदय होता है। पूरा भारत तुकड़ों–तुकड़ों में सनातनी और गैर सनातनी राजतंत्र में बटता गया। इनमें आपसी विरोध पनपने लगा। मुस्लिमों का आगमन प्रशस्त कराता है। बाबर से औरंगजेब तक भारत मुस्लिम दासता के चरमोत्कर्ष काल में गुलाम बनता है। सनातनी राजा अपनी बेटी–रोटी का सम्बंध बनाते है। सनातनियो का दलितो के प्रति छूआछूत के भावना से मुक्ति पाने दलित मुस्लिम धर्म की ओर आबद्ध होकर अपने आपको सनातनियो के छुआछूत क भावना से मुक्त पाते है। सनातनियो से अधिक समान्नित पाते है दलित के साथ सनातनी भी मुस्लिम धर्म की ओर आबद्ध होने की ओर होते है। सनातनी कट्टरता का बीज बोया जाता है। कट्टर सनातनी, का विशेषणित संज्ञा से विभूषित होते है। कट्टर सनातनी एव मुस्लिम सत्ताधीशों में युद्ध होता है। सनातनी एवं मुस्लिम सत्ता रियासतों में बटता जाता है। एक छत्र सत्ता युग समाप्त की ओर होता है। राजाओं एवं नवाबों का युग इतिहास बनता है। धर्म के विस्तार क्रम में गैर सनातनी धर्म गुरूनानक का सिक्ख धर्म गुरू घासीदास का सतनाम धर्म और भगवान महावीर का जैन धर्म उदय होता है। इसी क्रम में मुस्लिम शासन के चरमोत्कर्ष काल में विदेशी व्यापार का मार्ग प्रशस्त होता है। पुर्तगाल देश का डच कम्पनी, फ्राँस देश से फ्राँसीसी कम्पनी एवं ग्रेटबिट्रेन (इंग्लैण्ड) का इंस्टइंडिया कम्पनी के नाम पर व्यापार करते है। व्यापार बढ़ाने ये कम्पनी अपने–अपने बल बुद्धि से भारत में व्याप्त सनातनी राजाओ एवं मुस्लिम सत्ताधीशों का क्षत्रछाया प्राप्त करते है। बढ़ता व्यापार इन कम्पनियों में युद्ध कराता है। इंस्टइंडिया कम्पनी डच एवं फ्राँसीसी कम्पनी को भारत से खदेड़ चुका होता है। यही इंस्टइंडिया कम्पनी सनातनी राजाओ एवं मुस्लिम सत्ताधीशों के आपसी मतभेदों में व्याप्त दुश्मनी का भरपूर लाभ लेते हुये अपना स्वयं का साम्राज्य स्थापित कर लेता है। सम्पूर्ण भारत इंस्टइंडिया कम्पनी के नाम पर अग्रेजी बिट्रिश दासता की 200 वर्षों की गुलामी में जकड़ जाता है। इस बिट्रिश दासता काल में बिट्रिशो का धर्म इसाई धर्म का विस्तार होता है। सनातनी राजाओ एवं मुस्लिम सत्ताधीशों से पीड़ित जनता इसाई धर्म स्वीकार कर बिट्रिश साम्राज्य में सेवादार बनकर बिट्रिश साम्राज्य का अंग ही बनने लगे। हुकमती किरदार से सम्मान्नित होने लगे। परिणाम सनातनी राज एवं मुस्लिम सत्ता स्वमेव कमजोर होता गया। सनातनी का एक वर्ग अपने मूल स्वभाव चाटुकारिता के वशीभूत राष्ट्रीय स्वयं संध के बेनर तले बिट्रिश साम्राज्य के चाटुकारिता में अपना हित संवर्धन जाना। जबकि सनातनी का एक वर्ग आम जनता को साथ लेकर कांग्रेस के बेनर तले गरमदल और नरमदल के रूप में भारत को बिट्रिश साम्राज्य की गुलामी से मुक्त करने संघर्ष करने लगे। इसी बीच काल में कुछ समाज सुधारक महान विभूतियों ने सनातनी संविधान मनुस्मिृति की कमजोरी को जाना और समझा विरोध किया। इस विरोध का ब्रिट्रिश सत्ता का समर्थन मिला। समाज सुधार के प्रतिरूपण गैर सनातनी शिक्षा का अधिकार, छूआछूत से मुक्ति, सत्ता मे सहभागिता एवं नारी सम्मान की गाथा के शब्दों में सती प्रथा से मुक्ति एवं विधवा विवाह का मार्ग प्रशस्त हुआ। ब्रिट्रिश सत्ता काल अपने विकास पथ को मजबूती देने भारत में सड़क मार्ग, रेलमार्ग जलमार्ग

एवं हवाई मार्ग के साथ खदानों जलाशयों एवं रक्षा श्रोतों का विकास पथ विभूषित किया। जो आज पर्यंत स्वतंत्र भारत में देन स्वरूप स्वीकार्य है।मुझे यह कहने कोई संकोच नहीं कि सनातनियो के जुल्मो शीतम के विरूद्ध गैर सनातनियों को खड़ा करने सब्बल ही प्रदान किया है।

स्वतंत्र भारत में सामाजिक रहन–सहन के स्तर अवलोकन में संविधान के शब्दों में ब्राम्हण, क्षत्रिय वैश्य वर्गिक कट्टर (बड़ा) सनातनी को सामान्य–वर्ग में, इन कट्टर सनातनी के आतंरिक (रसोई, शयन, श्रृंगार, बैठक) सेवादार को पिछड़ा–वर्ग (रसोई, शयन, श्रृंगार, बैठक के आवश्यकता की पूर्ति करने वाले मेहनत कसों) बरामदा आँगन सीमा के सेवादार को अनुसूचित जनजाति –वर्ग में तथा गली मुहल्ला शौच श्मसान घाटों को सफाई करने एवं चर्म सामग्री के सेवादार को अनुसूचित जाति–वर्ग में चिन्हित किया गया। सामाजिक ,शैक्षणिक एवं राजनैतिक विकास में असमरेख थे। सामाजिक, शैक्षणिक एवं राजनैतिक विकास में समरेख करने की ओर अनुसूचित जनजाति –वर्ग और अनुसूचित जाति –वर्ग को आरक्षण की व्यवस्था दिया गया। जिसका राष्ट्रीय स्वयं संध के बेनर तले विरोध किया गया। राष्ट्र पिता महात्मा गांधी ने आम सहमति के निकटतर बहुमत के दावेदार सरदार वल्लभ भाई पटेल के प्रधानमंत्री के दावेदारी को उनके पिछड़ा–वर्ग होने को दृष्टिगत करते हुये बहुत ही चालाकी से बहुत ही अल्पमत (शून्येतर) के दावेदारी पर पंडित जवाहरलाल नेहरू को उनके तथाकथित सनातनी ब्राम्हण होने को दृष्टिगत करते हुये प्रधानमंत्री बनने का मार्ग प्रशस्त किया। एक प्रकार से राष्ट्रीय स्वयं संध का समर्थन ही किया जाना सिद्ध करता है। परिणाम दो राज्य के छोड़ देश के सभी राज्य के मुख्यमंत्री सनातनी ब्राम्हण ही बने। एक प्रकार से सनातनी ब्राम्हण गुलामी का पुनः उदय होना ही सिद्ध कराता है। जिसमें गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल और भारतीय संविधान निर्माता बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर ने ऐसा नकेल कसा कि अनुसूचितजाति और अनुसूचितजनजाति वर्गिक समाज राष्ट्र निर्माण की मुख्य धारा जुड़ने लगे। परिणाम समग क्रांति द्वार खुला। प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रतापसिंह मंडल कमीशन लागू कर पिछड़ा–वर्ग जाति समाज को अनुसूचितजाति और अनुसूचितजनजाति वर्गिक समाज की भाँति आरक्षण का लाभ देने का मार्ग प्रशस्त किये। जिसका तात्कालिक सनातनी समाज मंडल बनाम कमंडल के शब्द में विरोध किया। सत्ता की कमान सनातनियों को अपने से दूर आने लगा। बाबा साहब अम्बेडकर का संसद की ओर उठा उंगली क्रांति ही नहीं महाक्राति का प्रतिरूपण पथ को इंगित करता सिद्ध होता है। सनातनियों का तिलमिलाना स्पष्टतः परिलक्षित हो रहा है। तथाकथित सनातनी पिछड़ा–वर्ग अनुसूचितजाति आर अनुसूचितजनजाति वर्गिक समाज को सनातनी हिन्दु मानने मनवाने लगे है। मुस्लिम समाज के विरूद्ध खड़ा करने साम दाम दण्ड एवं भेद नीति के हर स्तर को अपना कर इक्कीसवीं सदी के प्रारंभिक दशक से संसद एवं विधानसभा में सत्तासीन होने की ओर अपना पैठ जमाने अग्रसर सिद्ध हो रहा है। आवश्यक होने ये सनातनी आज जिस वर्ग विशेष के विरोध

अनाय्र सथ्यता राजा बलि तक की एक जाति विहीन प्राचीन मूल सभ्यता है। राजा बलि महादानी थे।उनके इस दानी गुण का लाभ लेकर वामनी संख्या बल से राजा बलि का पतन करने वाले प्रथम बाहरी आक्रांता ही आर्य कहलाये । ये वही है, जिन्होंने जातिगत वर्ग भेद में बाँटकर छूआछूत के आडम्बर तले आज पर्यत हमें केवल और केवल हम अनार्यों का शोषण ही करने का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं।

में खड़ा करने हमें सनातनी / सनातनी हिन्दु/हिन्दु होने का मीठा गरलपान करा रहे है । यदि हम वहीं वर्ग विशेष सत्तासीन हो जाये तो उन्हें अपने चारणी कर्मकाण्डिक गुणाधीन में अपना सगाआप भी आर्य –अपन भी आर्य) वंर्शजी भाई बताने कोई संकोच कोताही नहीं करेगा। कहीं पुनः सनातनी व्यवस्था के मनुस्मृति काल को आत्मसातो होने की ओर अग्रसर तो नहीं हो रहे? हमें सावधान होना ही होगा। हमारे पूवज न सनातनी थे न हीं सनातनी/ सनातनी हिन्दु/हिन्दु है। हम अनार्य थे अनार्य है और अनार्य ही रहेंगे। हमारी जाति केवल मानव जाति है। हमारा धर्म केवल मानव धर्म है। एव एक ही सेवा मानव सेवा है। न हम बटेंगे न हमारी वसुन्धरा बटेगा आने वाला समय काल परिस्थिति • मै सनातनी नहीं हूँ• का नारा आत्मसाती होगा। आध्यात्मिक गणित भी यही सिद्ध करने की ओर प्रस्तुत है।

आध्यत्मिक गणित समिका

वो = तुम = मैं

पृथ्वी में जीवन की असीम सम्भावना को दृष्टिगत करते हुए परमपिता परमेश्वर (सृष्टि के रचनाकार) ने अनन्त स्वरूपों में जीव–जन्तु की रचना कर पृथ्वी को भूलोक (उत्पत्ति लोक) की संज्ञा प्रदान कर अलंकृत किया है। जहाँ स्वयं देवाधिदेव सृष्टि के रचनाकार अवतरण के लिए गणित करते रहते है। जिनके अनेकानेक अवतरण कथाएँ प्रमाणन में पढ़ी एवं पढायी जाती है। इन अनन्त स्वरूपों एक स्वरूप मानव है। यह मानव सभी समस्त अनन्त जीवों में बुद्धि ज्ञान बल मे स्पष्ट वाक शक्तिमय सामाजिक प्राणी के रूप में अपना स्थान स्थापित कर चराचर जगत में थल, जल एवं नभ में पाए जाने वाले सभी प्रत्यक्ष –अप्रत्यक्ष, भाशी–अभाशी, दृश्य–अदृश्य, सुक्ष्म–असुक्ष्म स्वरूपों में पाये जाने वाले जीव,–जन्तु, तत्वों वनस्पति, आकार – प्रकार के प्रतीकात्मक रचनाओं संरचनों को संज्ञा (नाम) प्रदान करने अग्रसर होने के तारतम्य में अपने रचनाकार का भी नामकरण करने की ओर अग्रसर होने लगा। विकास क्रम में भौगालिक, सामाजिक एवं राजनैतिक संदर्भ में विभिन्नताओं एवं जटिलताओं का जाल सा हो गया है। हर एक नाम देने वालों ने अपना– अपना रचनाकार अलग–अलग सिद्ध करने साथ एक–दुसरे के इस कदर विरोधी होने में लगा हुआ है कि स्वयं मानव मानव जाति को नष्ट करने आमदा हो रहा है। जबकि सभी नाम एक ही परमपिता के पर्यायवाची ही है। जिसका गणित प्रमाण समिका यथा अवलोकित करें।

हम जानते है– $-(A*B) = -(B*A)$ ------ गुणा का क्रमविनिमय का नियम से•

$\Rightarrow A^2 - A^2 - AB = B^2 - B^2 - BA$ ------ योज्य प्रतिलोम का नियम से•

$\Rightarrow A^2 - A(A+B) = B^2 - B(B+A)$

$\Rightarrow A^2 - A(A+B) = B^2 - B(A+B)$ ..... योग का क्रमविनिमय का नियम से•

$\Rightarrow A^2 - A(A+B) + (\frac{A+B}{2})^2 = B^2 - B(A+B) + (\frac{A+B}{2})^2$

------ दोनों पक्ष में तुल्य राशि $(\frac{A+B}{2})^2$ का योग करने का नियम•

$\Rightarrow (A - \frac{A+B}{2})^2 = (B - \frac{A+B}{2})^2$ ------ द्विपद का वर्ग प्रमेय से•

$\Rightarrow A - \frac{A+B}{2} = B - \frac{A+B}{2}$ ------ तुल्य घात का विलोपन से•

$\Rightarrow A = B$ ------ तुल्य राशिमान $\left(-\frac{A+B}{2}\right)$ का दोनों पक्ष में विलोपन से• सिद्ध

A और B के अलग–अलग संखात्मक मानों के लिए उक्त समीकरण को प्रतिरूपित या सिद्ध किया जा सकता है।

यथा $13 = 17$ को प्रतिरूपित या सिद्ध करना–

$-(13*17) = -(17*13)$ ------ गुणा का क्रमविनिमय का नियम से•

$\Rightarrow 13^2 - 13^2 - 13*17 = 17^2 - 17^2 - 17*13$ ------ योज्य प्रतिलोम का नियम से•

$\Rightarrow 13^2 - 13(13+17) = 17^2 - 17(17+13)$

$\Rightarrow 13^2 - 13(13+17) = 17^2 - 17(13+17)$------ योग का क्रमविनिमय का नियम से•

$\Rightarrow 13^2 - 13(13+17) + (\frac{13+17}{2})^2 = 17^2 - 17(13+17) + (\frac{13+17}{2})^2$

------ दोनों पक्ष में तुल्य राशि $(\frac{13+17}{2})^2$ का योग करने का नियम•

$\Rightarrow (13 - \frac{13+17}{2})^2 = (17 - \frac{13+17}{2})^2$ ------ द्विपद का वर्ग प्रमेय से•

$\Rightarrow 13 - \frac{13+17}{2} = 17 - \frac{13+17}{2}$ ------ तुल्य घात का विलोपन से•

$\Rightarrow 13 = 17$ ------ तुल्य राशिमान $\left(-\frac{13+17}{2}\right)$ का दोनों पक्ष में विलोपन से• **सिद्ध**

ऐसा प्रतिरूपण या सिद्ध करने का भाव मात्र महाभारत रणभूमि कुरूक्षेत्र में अर्जुन के युद्ध के प्रति निराशा का भाव जागृत होने पर भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिये महान आध्यात्मिक ज्ञान ग्रंथ गीता के –

""अघ्याय 5 श्लोक 18 **विद्याविनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि। शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः।।**

भावार्थ – वे ज्ञानीजन विद्या और विनययुक्त ब्राह्मण में तथा गौ, हाथी कुत्ते और चाण्डाल में समदर्शी ही होते है।

श्लोक 19 **इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्येस्थितं मनः। निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद् ब्रह्मणि ते स्थिताः।।**

भावार्थ – जिसका मन सम भाव में स्थित है, उनके द्वारा इस जीवित अवस्था में ही सम्पूर्ण संसार जीत लिया गया है, क्योंकि सच्चिदानन्द धन परमात्मा निर्दोष ओ सम है, इससे वे सच्चिदानन्द धन परमात्मा में ही स्थित है।

अघ्याय 6 श्लोक 32 **आत्मापम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन। सुखं वा दुखं स योगी परमो मतः।।**

भावार्थ – हे अर्जुन ! जो योगी अपनी भाँति‡ सम्पूर्ण भूतों में सम देखता है और सुख अथवा दुःख को भी सब में सम देखता है, वह योगी परम श्रेष्ठ माना गया है।" उदृत है।"

उक्त आध्यात्मिक गणित समीकरण के प्रतिभाव उदृत गीता ज्ञान का भावार्थ – हमें विभेद नीति से हटकर वैसद्धव कुटुम्बकम् के मूल भावना को आत्मसात करते हुए इस भूलोक में विकसित सभी धर्म, पंथ जाति में समदर्शी होकर सर्व–धर्म समभाव के प्रतीक हमारा एक ही धर्ग मानव–धर्म एवं एक ही जाति मानव–जाति को आत्मसात करें। और विश्व कल्याण हेतू

ऊँ श्री हरि • अल्लाह• विठठल–विठृठल• साहेब• कृष्ण• साईराम••

श्री बूढ़ादेव• प्रभु यीशु• बुद्धम• महावीराय • झूलेलाल• वाहेगुरू • सतनाम् ••

को अभिमंत्र स्वरूप चिंतन मनन करें।

हो एक ही आगाज हमारा– पूरी वसुन्धरा, परिवार हमारा•

विश्वशांति• विश्वशांति• विश्वशांति•

एक ही धर्म– मानव धर्म• एव ही सेवा – मानव सेवा•

जय सेवा• जय सेवा• जय.सेवा•

‡ जैसे मनुष्य अपने मस्तक ,हाथ पैर, और गुदादि के साथ ब्राह्मण, क्षत्रिय शूद्र और म्लेच्छादिकों का–सा बर्ताव करता हुआ भी उनमें आत्म भाव अर्थात् अपनापन समान होने से सुख और दुख को समान ही देखता है, वैसे ही सब भूतों में देखना "अपनी भाँति" सम देखना है।

पंचराम केशरिया 9685267495